

KGP की नई GC, गत्से GC !

KGP के lingo में अब एक नया शब्द जुड़ गया है sports GGC (Girls GC)। ऐसा माना जा रहा है कि Inter-IIT में लाइकिंगों के प्रदर्शन में सुधार लाने के लिए ये कदम उठाया गया है। जिमखाना की सराहना करनी होगी कि उन्होंने इसी semester में ही इसकी शुरूआत करने का साहसी निर्णय लिया व्यर्थ कि इसी जनवरी में ही इसकी नींव रखी गई थी। अभी ये केवल चार खेलों तक सीमित हैं लैकिन आशा है कि अगले साल ये अपना सम्पूर्ण रूप तो लेंगी। इसमें SN, IG, MT, MBM और RLB हॉल भाग तो रहे हैं। उन्होंने TT, Badminton, Aquatics एवं Basketball में एक दूसरे का सामना किया। इतनी जटिली में निर्णय लिये जाने के कारण

प्रतियोगियों को अभ्यास का बहुत कम समय मिल पाया है लैकिन इससे उनका उत्साह कम नहीं हुआ है। MBM, जाँच केवल प्रथम वर्ष की छात्राएँ रहती हैं, उन्होंने भी अपने सीनियरों को टक्कर देने की ठान ली है, और उनकी भी एक अंतर टीम है। इससे प्रथम वर्ष की छात्राओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का पूरा अवसर मिला। एक विडब्ल्यू यह है कि SN, IG, MBM जो Inter-Hall soc-cult में एक टीम के रूप में भाग लेती है sports



GGC में उन्हें आपस में भिड़ना पड़ा। तसवीर कुछ ऐसी थी कि एक तरफ तो choreo के लिए वे साथ अभ्यास करती थीं परन्तु खेल के मैदान में वे एक दूसरे की प्रतिद्वंदी बन जाती हैं। 9 फरवरी को TT एवं badminton के मैचों के साथ इस सफर की शुरूआत हो चुकी है। Badminton में प्रथम स्थान पर RLB, द्वितीय स्थान पर IG एवं तीसरे स्थान पर MT हॉल रहा। TT में प्रथम IG, द्वितीय SN रहा। Basketball का girl's inter-hall अभी चल रहा है और aquatics की शुरूआत 17 मार्च के बाद होगी। Sports Gsec देवाशिष सारंगी ने बताया कि इस बार तो किसी हॉल की GC नहीं दी जाएगी परंतु प्रग्रामपत्र मिलेंगे। इस बार की सफलता पर ही sports GGC का भविष्य निर्भर करेगा।

किसी भी नई सौच को आकार देने में मुश्किलें तो आती हैं और जो sports GGC की शुरूआत में भी आ रही है जैसे कि हॉलों में पर्याप्त बजट का ना होना, सारे खेलों के कैप्टन का ना होना जिससे टीम के चयन में मुश्किलें आ रही हैं। लैकिन हम आशा करते हैं इन सभी समस्याओं का समाधान अगले साल मिला जाएगा और sports GGC एक सफल आयोजन होगा।

KGP मेलबॉक्स क्रैश !

IIT KGP की वेबमेल सुविधा जिसका लाभ सभी प्रॉफेसर एवं छात्र उठाते हैं इस विसम्बर में एकाएक Crash हो गया, जिसका मुख्य कारण था- सर्वर के प्राइमेरी हार्डिंग्स के जगह की कमी। इसके कारण उपभोक्ताओं के जितने भी संदेश मेलबॉक्स में जमा थे, नष्ट हो गये। संदेशों की पुनः प्राप्ति किया मैं है। हालाँकि प्रॉफेसरों के संदेशों को पुनः प्राप्त कर लिया गया, फिर भी इस कार्य को करने में दो दिन का समय लगा जिसकी वजह से उन्हें परेशानियाँ झेलनी पड़ी। पहले भी हार्डिंग्स तो Crash होते थे जिन्हें बेकप की मदद से पुनः स्थापित कर दिया जाता था, परन्तु इस बार प्राइमेरी हार्डिंग्स का Crash कर जाना दुविधा में डाल गया। इस समस्या को सुलझाने के लिए सर्वर को अधिक क्षमता वाले सिस्टम में विस्थापित कर दिया गया।

ac.in mail के स्टार्टिफिकेट की अवधि की समाप्ति को प्रबंधक ने कोई अहमियत न देते हुए प्रतिक्रिया नहीं दी। साथ ही कहा कि फिलहाल स्टार्टिफिकेट की अवधि बढ़ाने का कोई विचार नहीं है। पहले के 75 MB की तुलना अब प्रत्येक उपभोक्ता को 150 MB Storage space उपलब्ध होगी जो इस माह के अंत तक प्रभाव में आ जाएगा।

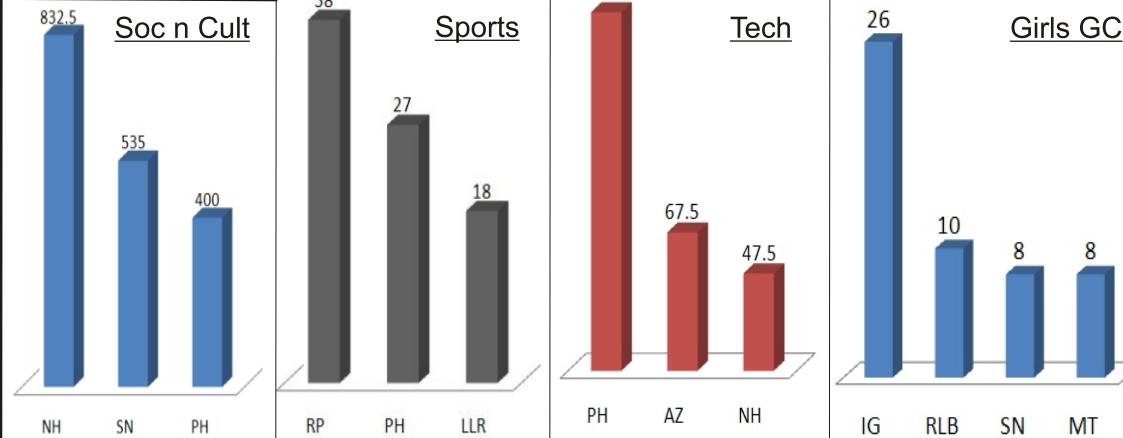
शिकायत मिली है कि कई छात्र अपने आप को पंजीकृत करता



तोते हैं पर इस सुविधा का उपयोग नहीं करते जिससे सर्वर पर अप्रयुक्त दबाव पड़ता है। साथ ही अप्रयुक्त email id को लोकर कई उपभोक्ता लापरवाह हो जाते हैं, अतः उनका अकाउंट हैक कर कोई भी आसानी से गलत फायदा उठा सकता है। अतः प्रबंधकों का निवेदन है कि केवल वही छात्र पंजीकृत करवाएँ जिन्हें इसकी आवश्यकता हो और केवल उन्हीं छात्रों के mail पुनः store होंगे जो खुद आगे बढ़कर निवेदन करेंगे। प्रबंधक हर उपभोक्ता के संदेश केवल 6 माह तक संचित रखेंगे। अतः alokes@cc.iitkgp.ernet.in पर मेल कर छात्र अपने पुराने mail को पुनः store कर सकते हैं।

G.C. मीटिंग

Soc n Cult

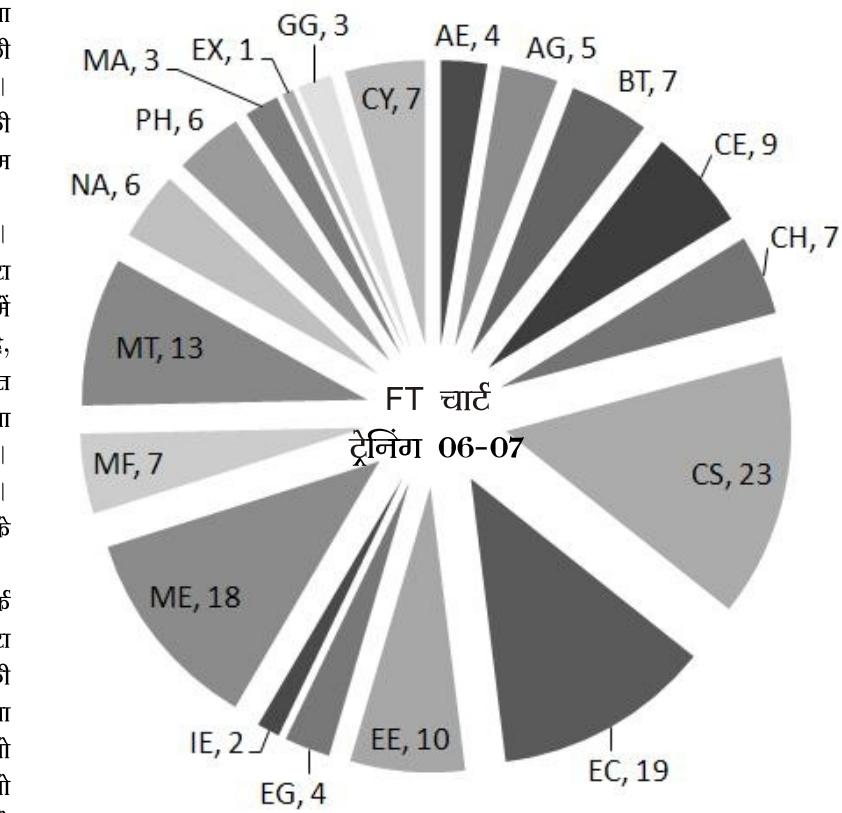


ट्रेनिंग '08

जिस तरह अंतिम वर्षीय छात्रों के लिए एक पसंदीदा कंपनी के साथ जुड़ना प्रमुख लक्ष्य होता है, वहीं दूसी वर्षीय छात्रों के लिए FT(Foreign Training) या एक अच्छी कंपनी में training प्राप्त करना placement प्राप्त करने की चिंता से कम नहीं होती है। हर वर्ष छात्र काफी मात्रा में खरयां प्रयास करके FT या कंपनियों में अपनी training पर्कशी करते हैं, परंतु अधिकतर छात्रों की training T&P के द्वारा ही प्रबंधित होती है। हमारी टीम ने T&P अधिकारी श्री दिनेश कर्मांकर से इस वर्ष की training का जायज़ा लिया।

इस वर्ष की बात की जाए तो T&P पर 550 छात्रों की training का ज़िम्मा था। जिसमें प्राप्त जानकारी के अनुसार, 5 मार्च 2008 तक 380 सीटों का प्रबंध T&P द्वारा किया जा चुका था तथा इन आंकड़ों में निचंतर वृद्धि हो रही है। यह तथ्य पहली नज़र में छोंका देनेवाला लगता है कि T&P सभी छात्रों की training लगवाने में सक्षम नहीं है, परंतु इस स्थिति के ज़िम्मेदार काफी हद तक हम छात्र ही हैं। T&P द्वारा प्रबंधित अधिकतर सीटें unpaid होती हैं। छात्र या तो इस कारण -वश या FT के आकर्षण से या अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए T&P द्वारा प्रबंधित सीटों का उपयोग नहीं करते हैं। इस कारण IIT की छवि खराब होती है तथा कंपनियाँ भविष्य में आने से करताती हैं। कुछ कंपनियाँ तो इस कारण नहीं आती कि पिछले वर्ष training के लिए चयनित छात्रों के कार्य से वे असंतुष्ट होती हैं।

T&P के अनुसार उन्होंने training के लिए 1300 कंपनियों से संपर्क किया, परंतु काफी कम कंपनियाँ ही राजी हुईं। इसका प्रमुख कारण छात्रों द्वारा कंपनियों की सीटों का उपयोग नहीं करना है। Training की प्रक्रिया placement की प्रक्रिया से काफी भिन्न है। जहाँ placement में एक दिन के अंदर ही सारी चयन प्रक्रिया पूरी हो जाती है, training की चयन प्रक्रिया में काफी दिन लग जाते हैं। कुछ कंपनियाँ तो ऐसी हैं जिन्होंने छात्रों की CVs नवम्बर में ही जमा करा लीं थीं पर उनके परिणाम या तो अभी मार्च में आए हैं या अब तक आए ही नहीं है। इस कारण एक ही छात्र एक से अधिक कंपनी/university में training के लिए चयनित हो जाता है। उपर्युक्त चयन प्रक्रिया के न होने के कारण जहाँ अच्छी CG वाले छात्र हर कंपनी में चयनित हो जाते हैं, थोड़ी कम CG वाले छात्र किसी भी कंपनी में चयनित नहीं होते। इससे कई सीटें व्यर्थ



रह जाती हैं जिससे फायदा न ही कंपनी को होता है और न ही छात्रों को।

छात्रों के नज़रिये से देखा जाए तो उन्हे T&P द्वारा प्रबंधित ज्यादातर सीटें अनाकर्षक लगती हैं। इस कारण -वश वे सितम्बर से लेकर मार्च तक का अधिकतर समय विदेशी विश्वविद्यालयों तथा अन्य कंपनियों में ई-मेल करने में व्यतीत करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में विदेश जानेवाले छात्रों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि हुई है। आंकड़ों के अनुसार 10 मार्च, 2008, तक 100 से ज्यादा छात्र FT लगवा चुके हैं। जो छात्र FT के प्रयास में विफल रहते हैं, वे अन्य FT पर जानेवाले छात्रों से खरयां को कमतर आंकते हैं। Placement प्रक्रिया के दौरान कंपनियाँ भी FT प्राप्त छात्रों को मुख्य रूप से shortlist करती हैं। इस कारण T&P द्वारा आयोजित training का महत्व कम हो जाता है।

इस वर्ष T&P द्वारा training निश्चित करने की आखिरी तिथि को पहले छात्रों की अपील पर 21 फरवरी से 7 मार्च किया गया, जिसे फिर बढ़ाकर 14 मार्च कर दिया गया। Training की स्थिति से निपटने के लिए विभागों और T&P के बीच कई बैठकें हुईं जिनमें यह प्रस्तावित किया गया है कि अगले वर्ष से छात्रों को T&P द्वारा training की सुविधा लेने के लिए रेजिस्टर करना पड़ेगा। प्रस्तावित समाधान किस दृष्टि तक सफल होता है यह तो समय ही निश्चित करेगा परंतु यह भी सत्य है कि Kgp की training प्रक्रिया कई मार्यानों में कमज़ोर है।

University of Southern California- IIT Kgp के साथ MoU के अंतर्गत USC पहले मात्र 15 दिन की training के लिए Kgp आई। परंतु training अवधि के अत्याधिक कम होने के कारण T&P तैयार नहीं हुआ। काफी बातचीत के बाद USC ने 29 फरवरी को 2 महीने के अवधि की training के साथ फिर से संपर्क किया।

TAFE- T&P के अनुग्रह तथा कम से कम 7-8 छात्रों के training की उपलब्धता के आश्वासन पर Agriculture विभाग से संबंधित कंपनी TAFE (ट्रैकर एं फार्म इकिंचिपमन्डल) ने अपने Training Program को IIT Kgp के छात्रों के लिए 1 महीने से बढ़ाकर 8 हफ्तों का किया परंतु अब हाल यह है कि TAFE में training के लिए बस एक ही छात्र तैयार हुआ है।

General Electric(GE)- GE ने training के लिए 100 से ज्यादा CVs में से आश्वर्यजनक रूप से सिर्फ़ 3 छात्रों का चयन किया और इसके लिए उसे 4 महीने लग गए।

Magma Design,Philips,etc - यह कुछ ऐसी बड़ी कंपनियों का नाम है जो पिछले वर्ष तो training के लिए आई थीं परंतु इस वर्ष training की लिस्ट से नदारद रहीं।

इस तथ्य से काफी छात्र अनभिज्ञ हैं कि T&P देश में कई शहरों में अत्याधिक कम दरों पर accomodation की व्यवस्था भी करती है। कुछ प्रमुख शैक्षणिक संस्थान तथा उनकी दर्तों के आंकड़े इस प्रकार हैं:-

IIT Kanpur - Rs 25/-per day)

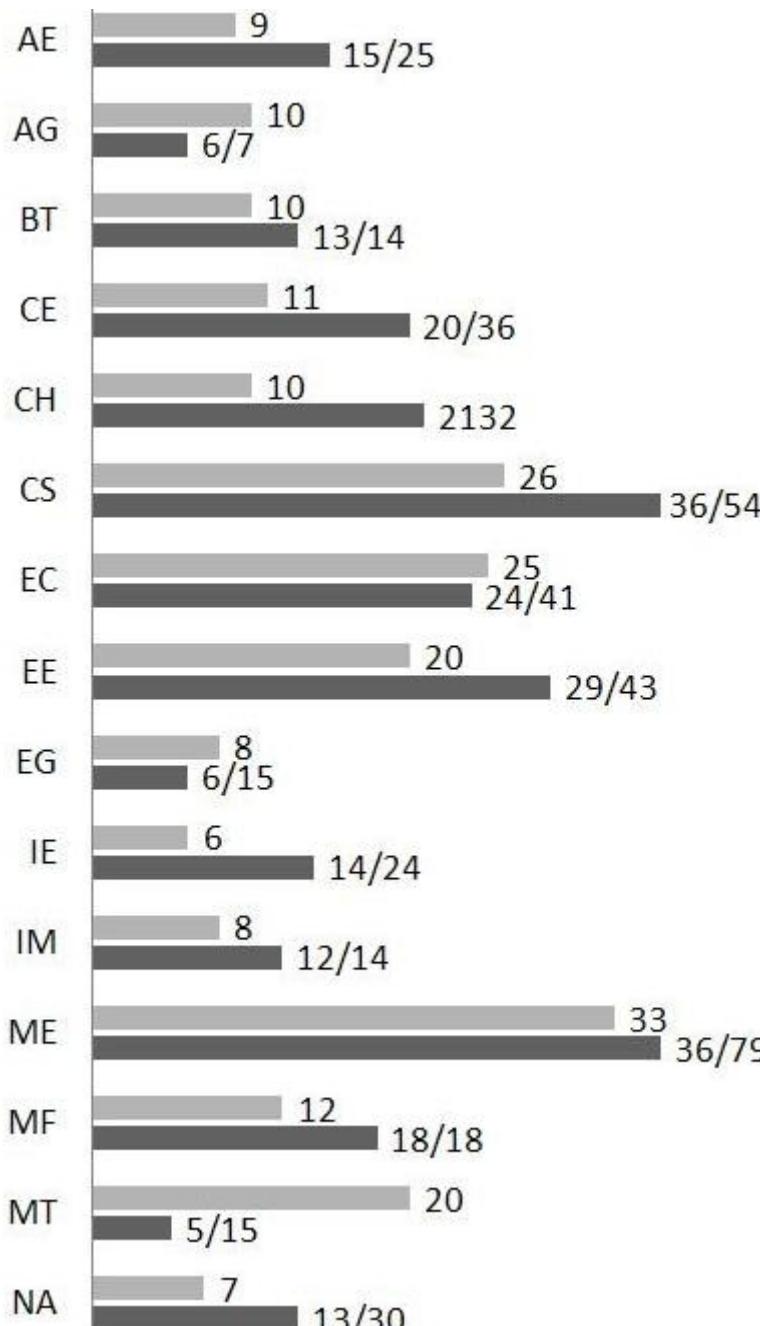
IIT Delhi - Rs 120/-per day)

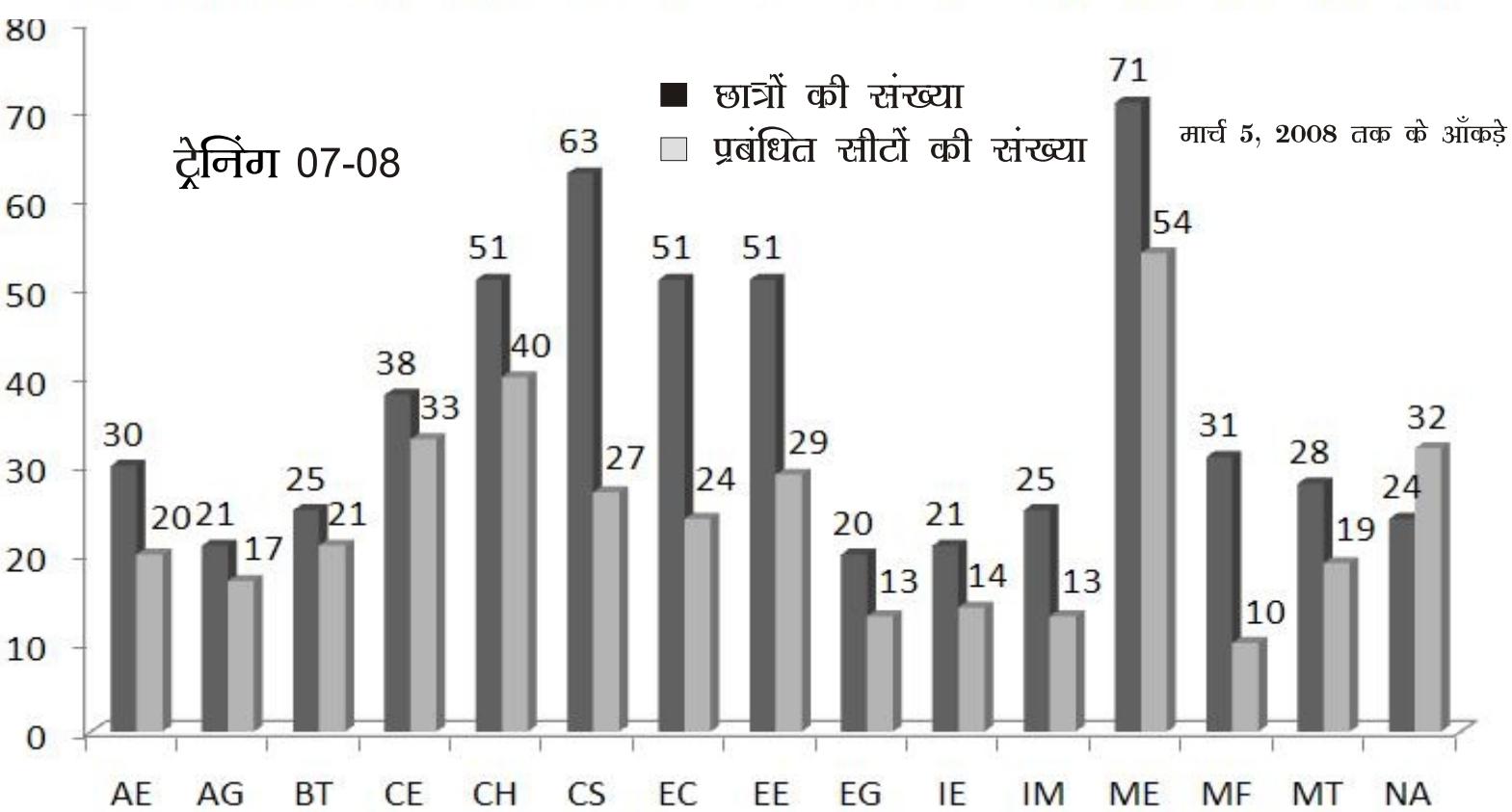
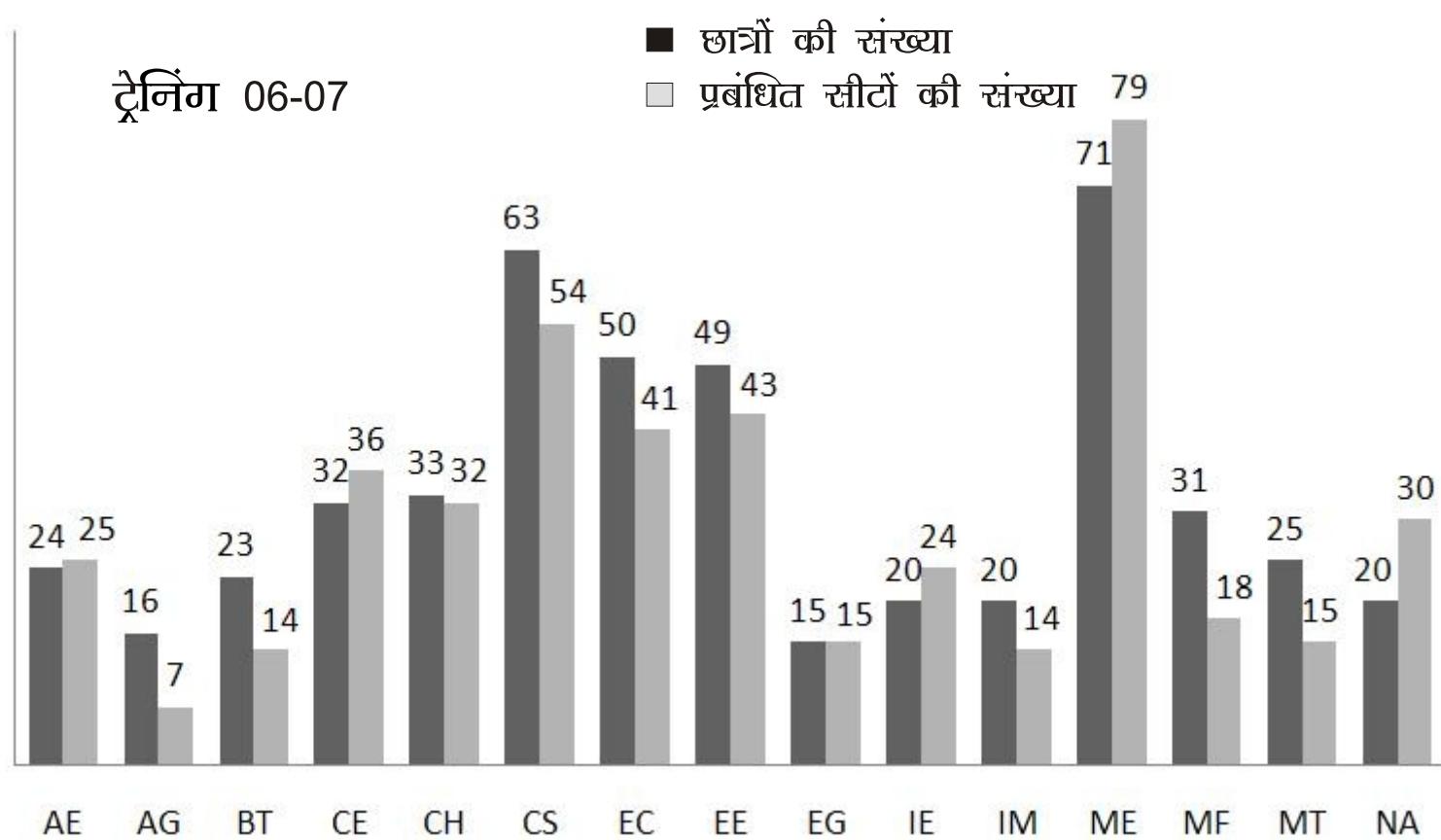
IIT Madras - Rs 100/-per day)

IIT Roorkee - Rs 65/-per day)(furnished), Rs 25/-per day)(unfurnished)

IIM Ahmedabad - Rs 75/-per day)

NIT Jamshedpur - Rs 2/-per day)





कैम्पस की सुरक्षा-व्यवस्था में भारी फेरबदल

पिछले कुछ दिनों से संस्थान में सुरक्षा के तेवर अचानक बदले-बदले से लग रहे हैं। हर कोने पर एक नए गार्ड के दर्शन हो ही जाते हैं। इस बात की जाँच करने आवाज़ टीम पहुँची Assistant Security Officer श्री नंद किशोर महतो के पास। उनके कथनानुसार हाल ही में भारत सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में पंजीकरण (privatisation) प्रारंभ किया है। इसका सीधा प्रभाव IIIT KGP की सुरक्षा स्थिति पर पड़ा है। वर्षों से चलती आई IIIT KGP की सुरक्षा दल का ढाँचा कुछ इस प्रकार का था-भारत सरकार द्वारा नियोजित 98 कर्मचारियों से सुरक्षा दल बनता था। इस दल का प्रथम उत्तरदायित्व Permanent basis पर नियोजित 3 अफसर एवं 7 इंसेप्टर करते थे। बचे 88 लोग Security Guards की पदवी पर अपना कार्यभार संभालते थे। परन्तु अब इस व्यवस्था में काफी फेरबदल किए गए हैं। संपूर्ण हॉल एवं

गेट सुरक्षा का ज़िम्मा (Signal Intelligence Service) SIS Security Agency के हाथों लौंपा जा रहा है। SIS को यह कान्ट्रॉक्ट कुल दो वर्षों के लिए प्राप्त है। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि सुरक्षा स्थिति में पहले भी अन्दरूनी बदलाव आ जरूर है, मगर सरकार की तरफ से ऐसा विशाल परिवर्तन देखने का यह पहला अवसर है। 17 मार्च 2008 से आरंभित इस रूपांतरण के तहत सरकार 88 में से 40 कर्मचारियों के डिपार्टमेंट परिवर्तित कर रही है। किंतु इन कर्मचारियों की तनख्वाह में कोई फ़रक नहीं आएगा।

SIS के अंतर्गत कुल 171 कर्मचारी अब सुरक्षा के लिए नियोजित किए गए हैं। 1 यूनिट कमांड और 8 सूपरवाइजर के अंतर्गत 162 गार्ड की बलात्तियन अब सुरक्षा का ज़िम्मा संभालेगी। इन गार्ड की जाँच प्रतिदिन 3-4 बार सरकारी अफसर करेंगे।

इस बात की हमें खुशी है कि सुरक्षा दल की क्षमता काफी हद तक बढ़ाई जा रही है। अफसोस है तो केवल एक बात का कि इस फोर्स में बस 50% अनुभवी कर्मचारी हैं। बचे 50% को केवल 1 माह की प्रशिक्षण व पश्चात नियोजित किया गया है। सुरक्षा विभाग में आइस बदलाव के कारण Experienced और Inexperienced सुरक्षा कर्मचारियों की संख्या लगभग बराबर हो गा है। इस बदलाव के परिणाम पर तो फिलहाल कुछ कह नहीं जा सकता, परन्तु हम सब की यही इच्छा होगी कि इस परिवर्तन से सुरक्षा विभाग में काफी सुधार आँखें और हमें सुरक्षा कर्मचारियों का पीठ थप-थपाने का सुनहरा अवसर मिलेगा।



Security and Intelligence Services (India) Limited

सबसे पहले तो सभी पाठकों को हमारा अभिनंदन। जनवरी के अंक में हुई प्रिटिंग की अनेक त्रुटियों के बावजूद आपने उसे जिस अंदाज़ से सराहा है, उसके लिए हम आपके आभारी हैं।

अब हम आपके सामने नए अंक के साथ हाजिर हैं। हमारा यह

अंक कई मामलों में हमारे लिए काफी महत्वपूर्ण है। गत वर्ष जिस प्रकार जनवरी के जबरदस्त प्रयास के बाद उस सेमेस्टर हमारा कोई और अंक ना आ पाया, तो इस बार भी लोगों के मन में थोड़ी शंका रह गई थी। इस कारण वर्तमान अंक का और भी बेहतर होना लाजिमि हो गया था। साथ ही संस्थान के दोनों बड़े उत्सवों के बाद का पहला अंक होने की वजह से भी इस अंक की महत्वा और बढ़ गई है।

फेस्टों की बात करें तो जहाँ ये छात्रों को प्रबंधन के गृह सिखाते हैं, वहीं कलास-लैब की एकरस ज़िन्दगी में नया रंग भी भरते हैं। पर हमें ये भी ध्यान रखना चाहिये कि, क्या ये फेस्ट अपने इस प्रयास में सफल हो रहे हैं? क्या उत्सवों का आयोजन सारी उद्देश्य से हो रहा है, या महज आयोजन ही इनका उद्देश्य हो गया है? यहाँ हम आलोचना नहीं करना चाहते और आलोचना करें भी तो किसकी? आखिर यह हमारा फेस्ट है और अगर हम किसी Third Party की तरह सिर्फ मीन-मेख करें तो यह गलत होगा। परन्तु अपने प्रयास को और बेहतर करने की कोशिश तो हीनी ही चाहिये।

दोनों उत्सवों पर अलग-अलग नज़र डालें तो SF टीम ने वर्षा के व्यवधान के बावजूद जैसे आयोजन किया वो काबिल-ए-तारीफ है। परन्तु SF में लगता है जैसे एक ठहराव सा आ गया है। हर साल कुछ नया करना या हर साल पिछले से बेहतर बनने की लकाक नदारद दिखती है। कई सारे इवेन्ट्स आयोजकों के नज़रअंदाज़ी के शिकार

श्रीमान KGPIan प्रसाद 2nd year के शुरूआत से ही FT के लिए पूरी fight मार रहे थे। सैकड़ों में नारे के बाद

आखिरकार फरवरी के माह में उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। आखिरकार हार्वर्ड university से उनकी call आ ही गयी। पर अब एक अजीब समस्या उनके सामने मुँह बाए खड़ी है। महोदय ने नवम्बर माह में ही passport के लिए आवेदन तो कर दिया था पर अभी तक उनका police verification भी नहीं हुआ है। अगर जैसे-तैसे उनका पासपोर्ट आ भी जाता है तो वीजा बनवाने में भी हजारी अड़वाने हैं। कुल मिलाकर, KGPIan जी का सपना लंबड़ प्रशासन की भैंट चढ़ने वाला है।

इस अनहोनी के शिकार हर वर्ष 50 से अधिक विद्यार्थी होते हैं। पासपोर्ट को लेकर IIT प्रशासन की तरफ से शून्य कदम उठाए गये हैं। हर वर्ष खड़गपुर से 1000 के ऊपर आवेदन जारी होते हैं। छात्रों की इस समस्या से प्रशासन को अवगत कराने का बीड़ा अब आवाज़ ने उठाया है।

इस समस्या को लेकर हम सीधे

बात संपादक की

दिखते हैं। जब हम आयोजन के उद्देश्य पर हावि होने की बात करते हैं, तो हमारा इशारा इसी तरफ होता है।

बात क्षितिज की कर्ते तो पिछले कुछ वर्षों में जिस रफ्तार से यह ऊपर जा रहा है, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

आज जब हम इसे एशिया का सबसे बड़ा Techno-Management Fest कहते हैं तो यह कहीं से भी अतिशयोक्ति नहीं लगती है। परन्तु यहाँ चिंता की बात ये है कि संस्थान के छात्रों की रुचि इसमें क्यों घट रही है। जिस तरह का उत्साह बाहर के प्रतियोगी दिखाते हैं शायद यहाँ के छात्रों में वो नहीं दिखता। हो सकता है कि इसके लिए आयोजकों से ज्यादा बाँकि छात्र ज़िम्मेदार हैं परन्तु क्षितिज टीम को पूरे संस्थान को साथ लेकर चलने का प्रयास करना चाहिए।

आशा है अगले वर्ष और अच्छा प्रयास करेंगे जिससे हम और भी अच्छे फेस्टों का आयोजन कर सकेंगे। वैसे उत्सवों के मास्ट फरवरी के बाद अब मार्च के महीना आ चुका है जिसमें एक बिंकूल अलग तरह का महील रहता है। जहाँ Halls के बीच GC की दौड़ में आगे बढ़ने की होड़ चरम पर पहुँच जाती है, वही लोकवंत्र का सबसे बड़ा हथियार, “चुनाव” भी अपना रंग दिखाने लगता है (गैर तलब है कि GC में तो इस साल ज्यादा कड़ी टक्कर नहीं दिख रही है, हाँ चुनाव के लिए सभी में ज़बरदस्त “टेप्सों” हैं)। हम आशा करते हैं की चुनाव की और संस्थान की गरिमा बनाई रखी जाएगी तथा सभी उम्मीदवारों के लिए यह एक अच्छा अनुभव संबित होगा। सभी उम्मीदवारों की जीत की शुभकामनाओं के साथ... अलविदा!

पहला - पासपोर्ट

DOSA प्रो. डी के शिकायी के दफ्तर जा पहुँचे। DOSA ने हमारी समस्या को पहले ध्यान से सुना और यह बात मानी कि अभी तक प्रशासन ने इस पर कोई खास कदम नहीं उठाया है। उन्होंने बताया कि पासपोर्ट बनाने की प्रक्रिया देश की सुरक्षा के हिसाब से अति संवेदनशील है। इसलिए कभी - कभी इस प्रक्रिया में देरी हो जाती है। फिर भी उन्होंने माना कि निश्चित तौर पर IIT को कुछ ना कुछ करना चाहिए।

इस समस्या के समाधान हैतुर अपनी तरफ से आवाज़ ने प्लॉसेमेन्ट सेल की तर्ज पर पासपोर्ट सेल गठित करने की सालाह महोदय को दी। उन्होंने हमारा आभार प्रकट करते हुए हमें आश्वासन दिया कि डायरेक्टर के साथ अगली meeting में इस समस्या को ज़रूर रखेंगे।

उन्होंने कलेक्टर से मिल कर एक एची टीम बनाने की योजना तैयार करने की बात कही

जो कि निरंतर संस्थान में आकर पासपोर्ट verification में होने वाली अनावश्यक देरी को दूर करेगी।

उन्होंने तत्काल पासपोर्ट के विषय में बताया कि छात्र SDO से मिल कर या किसी अन्य registered officer से मिल कर अपने फोर्म जमा करें तो निश्चित तौर पर 14 दिन के भीतर उन्हें पासपोर्ट प्राप्त हो जाएगा।

अभी के लिए उन्होंने छात्रों से अनुरोध किया है कि वे agents के चक्कर में ना पड़ें और अपना पासपोर्ट सीधे मिदनापुर के पासपोर्ट काउन्टर से बनवाएँ। ऐसा करने से लिए 1000 रुपये में यह कार्य हो जाएगा एवं समय भी कम लगेगा।

आवाज़ आशा करता है कि DOSA के ये आश्वासन ज़ल्द ही फलिभूत होंगे और अब छात्रों को पासपोर्ट बनवाने के लिए नाकों चने नहीं चबाने पड़ेंगे।

उड़ते पंछी की कवायद

खड़गपुर में चार साल एक लंबा समय होता है और हमारे व्यक्तित्व के विकास में काफी अहम भूमिका भी निभाता है। अब ये सिर्फ “चार साल” या किंवदं को हमारे लिए kgp भी मायने रखता है, मैंने यह सोचने की कोशिश नहीं की है।

हर परिचयित कई सारी संभावनाओं को जन्म देती है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसमें अवसार तलाशते हैं या एक बहाने के साथ अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। इस तरह यह चुनाव ही हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में सहायता होता है। और फिर यह व्यक्तित्व ही ऐसे निर्णय लेने में हमारी मदद करता है। उदाहरण के तौर पर यहाँ की राजनीति को देखें, हम इससे लड़ सकते हैं या इसे अपना सकते हैं या पीछे पीछे कोस सकते हैं। आवाज़ ने अपने कई संस्करणों में यहाँ के छात्र शैंघटनों में जागाबदी की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है।

यहाँ हमें कई डेलाईन्स का सामना करना पड़ता है, हमारे प्रोफेसर की डेलाईन्स का अवधारणा हमारे लिए एक बहुत सारी उम्मीदों और सपनों के साथ जागाबदी से साराहता है, उसके लिए हम आपके आभारी हैं। अब इसका हमें कभी न कभी लाभ होता है। यहाँ की नकल करते हैं या देर करते हैं या फिर पल्ला झाड़ लेते हैं और एक बहाना भर बना देते हैं। शायद इस तरह हम अपनी विश्वसनीयता और वास्तविकता दोनों से ही समझता कर लेते हैं।

आतिथि - लोख

आये। अपने घर वालों की अपेक्षाओं का भार लेकर जब हम आये तो हम सबके दिमाग में IIT की एक आदर्श छवि विचित्र थी, जिस पर हमने ऐसी प्रतिलिप्याद्या का सामना किया जो हमारे लिए बिंकूल ही नहीं था। इन चार सालों में कभी न कभी या तो हमें इस

Always set the trail, never follow the path

कंपीटिशन के सामने घुटने टेकने के लिये विवश कर दिया फिर हमने अच्छे और सही-नयी परिभाषायें ढूँढ़ ली। आज चार साल में एक शांति का अनुभव करता हूँ। न हाल टेम्पो का झंझट ना CV ना CG ना extra acads के बच्चे। मैंने इन सांसाचिक चीजों से सन्यास ले लिया या, मैं एक निज द्वारा उचित ढहरायी नींद में उधर रहा हूँ, कहना नहीं सकता।

हमने यहाँ क्या सीखा? हम जो चीज़ें सीखने चाहते थे वो हमने दूसरों को सीखते देखा या वो सीखने की हमें आवश्यकता आ पड़ी। जो हमने सीखा वो बस

उतना था जितना सीखने की हमर्म हिम्मत थी। ऐसा है कि हर चार्टर्स में एक बाधा है, और हमारे अन्दर इतनी कूबत होनी चाहिये कि हम इसे पार कर लें। पहले मैं सोचता था कि IIT का माहील बीचिक विकास के अनुकूल नहीं है। अब मुझे वह पुरानी अंग्रेजी कहावत याद आती है - Always set the trail, never follow the path। आज भी जब हम इस माहील को कोसते हैं तो शायद हम उन भैंड की झुंडों को कोसते हैं जिनका हम खुद भी अनुसरण करते हैं।

मैं इस जगह का धन्यवाद करता हूँ क्योंकि इसने मुझे थोड़ा बेहतर बनाया है। इसने खयालों की दुनिया से सच्चाई के धारातल तक पहुँचाने में बहुत मदद की है मेरी। शायद इसमें भी कुछ लोगों के मत भिन्न हो सकते हैं। फिर भी धन्यवाद IITKGP।

- पराग सौरभ

“आवाज़” ने अपने कई संस्करणों में यहाँ के छात्र शैंघटनों में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। जागाबदी लाने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है।

चार साल पहले हम KGP आये तो बहुत सारी उम्मीदों और सपनों के साथ

संस्कृति से जोड़ता SFIH

आधुनिकता की भागदौड़ में हम भले ही अपने संस्कृतार्थों एवं परंपराओं को भूलते जा रहे हैं, किंतु अभी भी ऐसी संस्थाएँ सक्रिय हैं जो हमें अपने जर्जरों की याद दिलाते रहती हैं। ऐसा ही कुछ कार्य SFIH (Students' Forum for India Heritage) कर रहा है।

संभव एक प्रयास उनका, जिन्होंने गरीबी, अज्ञानता, बेरोजगारी, भुखमरी को करीब से देखा है, जिनके दिल को छु गया है, इन बेचारों का दर्द।

संभव I.I.T kgp के कुछ छात्रों द्वारा शुरू किया गया है, जिन्होंने सभी छात्रावास में सूचना लगाकर संस्कृत के छात्रों को अपनी इच्छा से अवगत कराया और इच्छितों से जुड़ने का आग्रह किया। उनका कहना तो था कि वे असहायों के लिए कुछ न कर, अपने आदमसंतुष्टि के लिए कर रहे हैं। उन्हें भारत का दुःखदाय पक्ष को करीब से देखने का मौका मिल रहा है और अपने इस मातृभूमि के लिए कुछ करने की तमन्जा उत्पन्न हो गई है।

इस तमन्जा के पहला कदम तो उन असहायों को अपने तरफ आकर्षित करने हेतु कपड़े बाटना है, पर इससे उनके जीवन स्तर में कोई सुधार तो नहीं होगा। सुधार हेतु इनका उद्देश्य उन्हें जागरूक करना, उनके जीवन स्तर में सुधार लाना, येन केन प्रकार से दोनों दिलवाना, साथ ही साथ शिक्षा के महत्व बताना और उनके कड़ी मेहनत की कमाई को यूँ ही शाराब में डाल देने से रुकवाना है। इसके अलावा मेधावी छात्र जो केवल पैसे न होने के कारण कोई Form या किताब खरीदने में असक्षम हैं, उनकी आर्थिक सहायता करने की भी इनकी इच्छा है।

अंतरात्मा की आवाज पर सफलता-असफलता की बिना गणना किया हुआ यह प्रयास कब तक अथक चलता रहेगा, इसका पता तो उन्हें भी नहीं है, पर संतुष्टि होगी अगर इस प्रयास के बदौलत किसी एक का भी जीवन सुधार जाए और उनसे जुड़े छात्र के मन में इनके लिए साहनुभूति उत्पन्न हो जाए और भविष्य में भी इनके भलाई में अपना योगदान देता रहें। हम आशा करते हैं कि असंभव को संभव बनाने की कोशीश में आप सफल रहें। हमारी शुभकामनाएँ।

IIT Kharagpur को उस शिखर तक पहुँचाना है कि शोष IITs ईर्ष्या करें” डाइरेक्टर महोदय डॉ. दामोदर आचार्य के कहे इस कथन को सार्थक करने के लिए ‘नेहरू संग्रहालय’ ने भी सदाहनीय कदम उठाया है। साथ ही यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि यह निर्णय हमारा नाम सदा के लिए संग्रहालय में अंकित करवाने का मौका दे रहा है।

आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्या करना होगा? काम बहुत ही आसान है पर हाँ थोड़ी ती मेहनत करनी होगी। नेहरू संग्रहालय IIT Kharagpur के विद्यार्थियों के लिए विज्ञान एवं नवविकसित तकनीकों पर मॉडल निर्माण प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है जिसमें प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले मॉडलों को नगद पुरस्कार दिया जायेगा तथा साथ ही उनके मॉडलों को संग्रहालय में प्रदर्शित किया जायेगा।

इस प्रतियोगिता के लिए कोई प्रवेश शुल्क नहीं है पर हाँ आपको एक फॉर्म भरना होगा (व्यक्तिगत रूप से या अपनी टीम के साथ जिसमें अधिकतम 4 सदस्य हो सकते हैं)। यह प्रतियोगिता दो चरणों में होगी - प्रारम्भिक



<http://www.iitkgp.ac.in/nehrumuseum/index.html>

चरण जिसमें आपको अपने मॉडल का Working Drawing submit करना होगा। इसके आधार पर चुने हुए मॉडलों का अगले चरण में निर्माण कराया जायेगा जो संग्रहालय ने प्रदर्शित होगे। मॉडल में उपयोगी रॉमैटेचियल जैसे Perspex, Plywood इत्यादि संग्रहालय द्वारा ही प्रदान किए जाएंगे। साथ ही Professional Model Construction विषय पर एक workshop भी आयोजित कराने का विचार किया जा रहा है।

हालाँकि आयोजकों ने मॉडल निर्माण के लिए कुछ आधुनिकतम विषयों का चयन किया है लेकिन आप अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी मॉडल बना सकते हैं।

इस प्रतियोगिता के लिए रजिस्ट्रेशन की अन्तिम तिथि 10 मार्च थी। Working Drawing जमा करने की अन्तिम तिथि 31 मार्च है। प्रतियोगिता के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए आप डॉ. धूक्योति सेन, चेयरमैन नेहरू संग्रहालय (Email: djsen@iitkgp.ac.in एवं फोन नं.: 09434721888) से संपर्क कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए लॉग ऑन करें:

आवाज टीम

सम्पादक :
अरुणाम परिहार
कुमार अभिनव
श्याम सुंदर

सह संपादक :

सुरेन्द्र केसरी
अभिनव प्रसाद
विकास कुमार
पंकज कुमार सोनी
सुमित सिंघल
नरेश कुमार सोनी

रिपोर्टर :
आकाशदीप
अनुभव प्रताप सिंह

राजेन्द्र चौधरी
वरुण प्रकाश
डिजाइन टीम :
अयान मजुमदार
पारस खेतान
सिद्धार्थ दोशी

जूनियर रिपोर्टर :
आशुतोष कुमार मिश्रा

आदित्य मणि झा
मनोज कुमार
शिरीश सुब्रह्मण्यन
कपिल गुमार्ता
सोनल श्रीवास्तव
अनुभा गर्ग
दामिनी गुप्ता
अंकिता मंगल
विक्रम कदम
गौरव अग्रवाल

श्रीमान् PC, शुक्रिया

Mr. चपड़गंजू एक सुबह बहुत खुशा दिखाई दिए। पर इतनी सुबह उनका इतना खुशा दिखना औरों को हैरान कर रहा था। यूं तो किसी भी सुबह उनका दिख जाना ही लोगों को परेशान कर देता है क्योंकि उनकी सुबह तो normally होती ही नहीं, बस शाम और रात होती है। हाँ, final year के इन बीते कुछ महीनों में उन्हें इस समय में पापा ज़रूर गया है, पर वो भी सामान्यतया दो ही कारणों से - या तो नौकरी की रेस में जल्दी-जल्दी formal पहन कर TnP जाने के लिए अथवा रात में बिना ***** गम गलत ***** किये सो जाने से। दोनों ही स्थितियों में उनका दंस पूरे wing वालों को झेलना पड़ता था। खैर, नौकरी तो साहब की लग चुकी है और वो भी सरकारी, सो वो तो कारण हो नहीं सकता और दूसरे कारण में ये इतने खुश क्यों दिख रहे हैं। बस इन्हीं अनजान लड़ियों को सुलझाने में हम सारे wing वाले लगे थे कि जनाब हमारी ओर ही आते दिख गये। अब तो हमने पूछ ही लिया कि "भई ये आड़ी तिरछी मुख्कान क्यों फेंक रहे हो आज, कौन सी कथामत आन पड़ी है?" सावाल की चोट पड़ते ही साहब flashback में चले गये। बड़ी ही मशक्कत से जिस राज से पर्दाफाश हुआ वो कुछ इस प्रकार था।

कल रात वार्किंग Mr. चपड़गंजू की सिगरेट की कमी हो गयी थी और आर्थिक विपन्नता की वजह से तो वो और जले-भुने बैठे थे। जैसे-जैसे रात ढली उन्हें ये भी याद आता गया कि अब तो मार्च आने वाला है और इस महीने तो पापा भी income tax की मार के कारण जैबखर्च काट देंगे। हृद हो गयी थी, अब तो उन्हें सुबह तक नीद ही नहीं आयी। खैर सुबह हो गयी पर आज Mr. चपड़गंजू ने गलती से बगलवाले का अखबार उठाकर पढ़ लिया और ये मुख्कान उसी के कारण खिली हुई है।

अखबार में वाष्पिक बजट का पूरा व्यौदा दिया हुआ था और Mr. चपड़गंजू ने उसी में गोता लगा के अपनी खुशी के द्वारा कुछ इस तरह ढूँढ़े:

1) सरकार यानि PC साहब ने अश्वासन दे डाला कि सारे सरकारी बाबुओं की

तनखाव बढ़ जायेगी और इस महीने के अंत तक उसकी घोषणा भी कर दी जायेगी। इससे Mr. चपड़गंजू खुद के लिए ही नहीं, कैप्स प्लेसमेंट्स से सरकारी कंपनियों में गये 100 के लगभग अन्य नाम बैनाम दोस्तों के लिए भी खुश हो गये। मानवतावादी जो ठहरे।

2) फिर PC ने इनकम टैक्स की सीमा भी घटा डाली थी। अब तो Mr. चपड़गंजू के दोनों हाथों में लाइस दिख रहे थे। पहले तो जोड़ा कि उन्हें 3-4 महीने बाद joining में किंतना मिलेगा फिर द्यान आया कि बाबूजी का भी तो टैक्स कम कटेगा और वो तो कई मज़ें की दवा होगी।

3) साथ ही चार साल से दबी-कुचली उनकी मोटरगाड़ी चलाने की खालिशा भी कुलांचे भरने लगी थी क्योंकि PC साहब की कृपा से bikes और छोटी कारों के दाम और मुँह गिरने वाले थे।

4) ऊपर से जनाब को PC साहब के तीन सार्जों में ITs खोलने की घोषणा से भी अपार खुशी हुई क्योंकि fraternity में अब हर साल काफी वृद्धि जो होने वाली थी।

5) बस एक बात उन्हें खल रही थी, हर बार की तरह इस बार भी PC साहब ने सिगरेट को नहीं छोड़ा और उसपर टैक्स बढ़ा दिया। पर खैर कोई बात नहीं, इसका सामना तो हर साल करना पड़ता है।

तो ये था Mr. चपड़गंजू की आक्रिमिक खुशी का राज, पर हमारी उत्सुकता के ग्राफ को शेयर मार्केट की तरह तेज़ी से उत्तरदे देखकर अब हैरान होने की बारी जनाब की थी सो उन्होंने हमारी ज्ञानेचा की कमी पर तरस खा कर बाकी details बताने से विनम्रता से इंकार कर दिया और अपनी राह चलते बने।

फृच्यों के लिए Hall Day

दिसंबर के महीने में घर में FT मारने के बाद सारे फृच्ये frust हालत में KGP पहुँचे। पर नजाने क्यों सारे सीनियर के चेहरे पर भीनी-भीनी सी हँसी छाई हुई थी। मिडसेम के खतम होते ही उन्हें अपने सावाल का जवाब मिल ही गया -poltu।

MMM हॉल का वीरान आँगन अचानक से भर गया। साल में पहली बार Senior Halls को MMM में आने दिया गया। और तब जिस बाढ़ ने MMM को घेर लिया, फृच्यों को अपने दस दिन की नीद मानो कुरबान ही करनी पड़ी।

हर रूम में 2 की जगह 20 लोग दिखाई पड़ने लगे। 1 candi के पीछे 25 shadow मंडराते रहते थे। इंतजार रहता था तो केवल उस पल का जब SN अपनी G.Sec. Sports candi को ले आती। कुछ लड़कों

का कहना रहा था कि वे candi देख-देखकर परेशान हो गए थे। SN के आने से इनमें भी अजब tempo दिखने लगा। MMM के corridors फिर भर गए। ज़ाहिर बात है कि candi से ज्यादा तो shadows को महत्व दिया गया।

Campaigning की इसी हलचल के बीच फृच्यों को ऐसे समय का दर्शन मिला जब उन्हें 'KGP के दामाद' का खिताब justified लगा। भेड़ियों की तरह हॉल में जाकर सीनियर को खोज निकालना, फिर भूखे शेर की तरह झपट्टा मारकर treat जुगाड़ना, ये सारी हरकतें First Year की यादें बनकर जिन्दगी भर साथ रहेंगी। सीनियर अपने साफ रूम बंदियों को दर्शाने के लिए तरसते रहते थे। उनकी हर असफल कोशिश के बाद तन्हाई छा जाती थी, और रात 12 बजे की (Haywards 5000) ही उन्हें राहत दिलाने में काम आती थी। इस

बार का नाच गाना और OP Duplicate Roadies 5 .1 हमेशा याद रहेंगी।

फड़े दे -देकर सीनियर तो थकने का नाम नहीं ले रहे थे, मगर आखिर में आपे से बाहर होकर एक फृच्ये न पूछ ही लिया "First Years को KGP का दामाद कहते हैं यह बात तो खैर समझी जा सकती है, मगर Second Year KGP का नौकर क्यों कहलाता है?" जवाब में Second Year बस मुख्काराकर बोला, "बैटा सीनियर हॉल आओ तो सही, कुछ funda वही मिलेगा!" और इस कदर कटा में एक और दिन...

KGP में T20

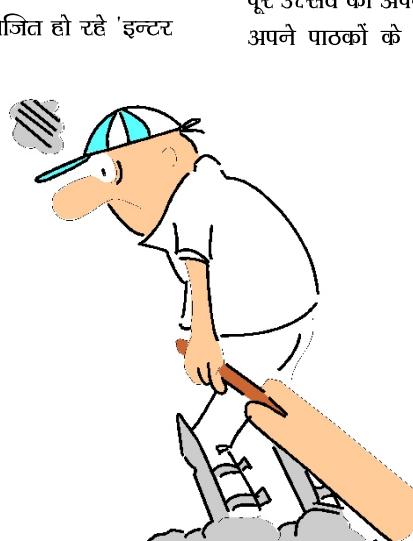
20 अप्रैल 2013, स्थान-टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स। सुबह से ही कैम्पस में गहमा-गहमी का माहौल है। सभी लोग अपने चहेते सुपरस्टार 'आर्यन खान' की ज़ालक पाने को बेताब हैं। पूरा जनसैलाब टाटा र्पीट्स कॉम्प्लेक्स अर्थात् TSC की तरफ बढ़ता दिखाई दे रहा है। नीटी जीन्स और सादी शर्ट पहने जिमखाना वाइस प्रसिडेंट, खड़े बड़े इतरा रहे हैं और खिल-खिला रहे हैं कि अपने चुनावी गाड़े को अमरी-जामा पहुँचाने का वरक्त आ गया है। दुर्घटन की तरह सजी insti और कैम्पस की ज़लक देखते ही बन रही है। मौका है KGP में पहली बार आयोजित हो रहे 'इन्टर हॉल 20-20 क्रिकेट टूर्नामेंट' का।

किसी भी IIT में पहली बार आयोजित यह प्रतियोगिता अपने आप में ही विचित्र और अद्भुत है। IPL और ICL की तर्ज पर शुरू हुई इस प्रतियोगिता पर सभी की नज़र है। सामान्य इंटर हॉलें न रहकर यह तीनों GCs से ऊपर उठ चुका है। SF र्पॉन्सर्स 'अग्नि हॉल' ने जहाँ IIA बॉम्बे के बहुचर्चित खिलाड़ी 'करण प्रकाश' को अपनी टीम में शामिल कर सनसनी फैला दी है। लोकिन उसी हॉल के द्वारा खिलाड़ी 'भानू प्रताप सिंह' 'पृथ्वी हॉल' की तरफ से खेलते नज़र आएँगे। क्षितिज र्पॉन्सर्स 'शिल्प हॉल' की टीम ने खिलाड़ियों को लुभाने के लिए foreign training का वायदा किया है। वहीं टेक्नोलॉजी प्लेसमेंट सोसाइटी ने अपनी 'आकाश हॉल' की टीम की तरफ से खेलने वालों की 30 लाख के ज़ॉब की गारंटी दी है। कार्यक्रम की शुरुआत बहुत ही धूम-धाके से होगी। ETMS इस खेल महाकुंभ की शुरुआत गीत-संगीत की

क्या आपने कभी सोचा है कि अगर खड़गपुर में भी ICL और IPL की तर्ज पर अग 20-20 की शृण्खला शुरू की जाए तो क्या-क्या हो सकता है? 2015 में होने वाली ऐसी प्रतियोगिता पर खायाल बुनते हमारे खायाली रिपोर्ट 'खायाली विद्वान'

शाम के साथ करेंगी और अपने द्वारा र्पॉन्सर्स 'वायु हॉल' की टीम के साथ FusionMix प्रस्तुत करेंगी जिसमें उसके खिलाड़ी रंगमंच पर अपना जलवा दिखाएँगे। समापन का जिम्मा TDS ने अपने सर लिया है जहाँ वो अपनी अग्नि हॉल की टीम के खिलाड़ियों द्वारा हस्ताक्षरित बल्ला दर्शक-दीर्घा में विदरित करेंगी। SchoolsAve की टीम ने जहाँ पूरे उत्सव को अपनी वेबसाइट पर LIVE दिखाने का वायदा किया है। वहीं आवाज ने भी अपने पाठकों के लिए खेल के हर लम्हे को कैद करने के लिए एक नया दैनिक सप्लाइंट 'हर लम्हे' नाम से प्रकाशित किया है। खेल-कूद से थोड़ा विश्वास दिलाने के लिए आवाज द्वारा एक विशेष कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया जाएगा।

देखा जाए तो पूरा KGP 20-20 में हो गया है। आखिर हो भी क्यों नहीं। यहाँ सभी के लिए कुछ न कुछ तो है ही। जहाँ खिलाड़ी अपने रंगबे और उससे होने वाले अनेक फायदे के लिए मैदान में उतरेंगे, वहीं हर सोसाइटी भी अपने आप को दूसरे से अल्प साबित करने के लिए इस मौके को भुनाने के लिए कमर कस तैयार है। KGP की आम जनता भी मनोरंजन के लिए बहुत उत्सुक खड़ी है और खेल के दौरान विभिन्न र्पॉन्सर्स द्वारा बाँटे जाने वाले Goodies ने उनके उत्साह और खुशी को चौगुना कर दिया है। वैसे भी प्राक्षेपण की एक टीम होने के कारण लगभग सारी कक्षाएँ या तो रद्द कर दी गई हैं या तो टाल दी गई हैं। आज का दिन KGP के इतिहास में र्पॉन्सर्स में लिखा जाएगा।



TTG : एक सराहनीय कदम

जैसा कि IITKGP के छात्रों की विशिष्टता है, वे प्रतिदिन कुछ ना कुछ नया करते रहते हैं। ऐसा ही एक कदम लगभग एक वर्ष पूर्व चतुर्थ वर्षीय तीन छात्र -राहुल सिंघल(pass-out), प्रवेशा दुधानी एवं हिमांशु शर्मा(super-final year) ने IIT-KGP में विकसित होने वाली तकनीकों को उनके अधित स्थान यानि कि इण्डस्ट्रीज में पहुँचाने के लिए बढ़ाया। उनका यह कदम TTG(TECHNOLOGY TRANSFER GROUP) के रूप में सामने आया। इस ग्रुप का लक्ष्य IIT-KGP में उपलब्ध एवं नव विकसित तकनीकों को इण्डस्ट्रीज तक पहुँचाना है ताकि इसका फायदा सीधे प्रोफेसर एवं छात्रों को मिल सके।

इस ग्रुप की टीम में faculty advisors के रूप में Dean, SRIC एवं Prof. in-charge IPR & IR हैं। दो convener एवं 6 हेड तथा 16 सदस्य हैं, जो SRIC (Sponsored Research and Industrial Consultancy) के मार्गदर्शन में अपने लक्ष्य प्राप्ति के कठीबद्ध हैं। इसके फायदों के बारे में प्रवेश ने बताया कि जब ये तकनीकें इण्डस्ट्रीज में पहुँचती हैं तो इस बात की काफी संभावना रहती है कि कुछ कंपनियाँ इन तकनीकों को और विकसित करने के लिए मदद करें जिससे कंपनियों को तो लाभ होगा ही साथ ही साथ खोजकर्ताओं को भी प्रोत्साहन मिलेगा। इससे IIT जैसे शैक्षणिक संस्थानों में

research को बढ़ावा मिलेगा और निस्सन्देह आश्चर्य जनक परिणाम देखने को मिलेंगे।

छात्र कैसे इसका लाभ उठा सकते हैं, यह पूछने पर प्रवेश दुधानी ने बताया कि वेबसाइट पर एक फार्म उपलब्ध है जिसे भरना होगा ताकि TTG को विद्यार्थियों के बारे में सारी जानकारियाँ मिल जायें। उसके बाद हम काम शुरू करते हैं। सर्वे फार्म भरने के बाद पेटेन्ट फाइल करने और सारी प्रक्रियाओं को निपटाने की जिम्मेदारी हमारी होती है। हम पेटेन्ट लाकर विद्यार्थियों के हाथ में देते हैं।

अब तक की सफलताओं के बारे में पूछने पर प्रवेश ने बताया कि इसकी सफलता का अंदाज आप इस बात से लगा सकते हैं कि लगभग 85% प्रोफेसर इस ग्रुप से जुड़ चुके हैं। हमने एक ऐसा database तैयार कर लिया है जिससे हम 500 से अधिक कंपनियों से संपर्क कर सकते हैं। इस कार्य में IIT प्रशासन और SRIC हमारी हरसंभव मदद कर रहे हैं और प्रोत्साहन दे रहे हैं।

अब यह ग्रुप अपनी साल भर की तपस्या के साथ Indac08(Industry-Academic) के रूप में 5-6 अप्रैल को आपके सामने आजिर होगा। यह fest अपने तरीके का सम्पूर्ण भारतवर्ष का प्रथम fest होगा जिसमें करीब 200-250 इण्डस्ट्रीज के प्रतिनिधि याहाँ आकर विभिन्न नव-

विकसित तकनीकों से परिचित होंगे। वो इस फैस्ट में या तो हमारी पूरी technology खींच लेंगे या उस technology को उपयोग करने का लाइसेंस ले लेंगे। इससे पूरा लाभ खोजकर्ता को मिलेगा। इसके साथ ही अगर IIT छात्र इन तकनीकों को लोकर कुछ नया करना चाहते हैं तो संस्थान उनकी हर संभव मदद करने के तौर पर है। इससे entrepreneur बनने के इच्छुक छात्रों के लिए भी यह fest आकर्षण का केन्द्र होगा।

इस ग्रुप के सदस्यों में जोश तो उस वक्त भर गया जब मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, (MHRD) भारत सरकार द्वारा प्रोत्साहन एवं साराहना मिली (kgs में पहर्ता बाट किसी फैस्ट को यह सम्मान मिला है)। अब तो सारे सदस्य indac08 को सफल बनाने में जी जान से लग गये हैं।

हमें आशा है कि TTG का यह प्रयास प्रोफेसरों और विद्यार्थियों को उनकी intellectual property rights का शान्त प्रतिशत लाभ दिलाने में मदद करेगा और research के क्षेत्र में क्रांति लाएगा। हम विद्यार्थियों से निवेदन करते हैं कि इस ग्रुप को पूरा सहयोग प्रदान करें क्योंकि यह हमारे लिए ही काम कर रहा है। वेबसाइट का उपयोग करते हुए regular update देखते रहें और सर्वे फार्म भरने और इस का फायदा उठायें।

खबर : दिलीप छाबड़िया (DC)

प्रश्न : टाटा की nano के जो चर्चे चल रहे हैं इस पार्श्वभूमि पर आनेवाले सालों में क्या आप dc designs को इस क्षेत्र में देखना चाहेंगे ?

DC : हम उत्पादक नहीं हैं। हम designers हैं। स्वभाव से मैं कलाकार हूँ। न कि businessman। और मूझे कलाकार बने रहने में ही आनंद है।

प्रश्न : DC designs स्थापित कर design के क्षेत्र में पहल करके आपने उद्योजकता का एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। हमारे भावी उद्योजकों को आपकी सफलता का मत्र देना चाहेंगे ?

DC : सर्वप्रथम आप जो भी करते हैं उसके लिये पूरी तरह passionate होने चाहिये। जीवन में आपको क्या करना है, ये निश्चित कीजिये और उसके लिये passionate बनिये। अच्छे व्यापारी अच्छे संभाषणकर्ता बनिये। धैर्यवान बनिये। जोखिम उठाइये। और धैर्य से निर्णय लीजिए।

प्रश्न : दस सालों बाद आप dc designs को कहा देखते हैं ?

DC : हमें हर उस क्षेत्र में जाना होगा जो design से जुड़े हैं। जैसे कि interiors, , furniture, aircraft। और automobile design के क्षेत्र के हमारे अनुभव का हमें फायदा भी होगा।

प्रश्न : अंतिमतः हम ITians के लिये आप क्या संदेश देना चाहेंगे ?

DC : भारतीय विद्यार्थी अपने स्वर्णों को साकार करने के लिये पूरा प्रयास नहीं करते। जबकि उन्हें सभी तरह की सुविधायें आसानी से उपलब्ध हो सकती हैं। Fundings आसानी से उपलब्ध हो सकती हैं। इसका फायदा लेते हुए उन्हें आगे बढ़ना चाहिये।

प्रश्न : टाटा नैनो पर आपकी राय ?

DC : टाटा नैनो की तरफ से एक अत्यंत सराहनीय प्रयास है जिसने भारत को विश्व पटल पर इस रूप में स्थापित किया है कि भारतीय भी इतनी कम लागत पर कार डिजाइन कर सकते हैं।

प्रश्न : एक लाख की कार के औचित्य में क्या आपको नहीं लगता कि पार्किंग की समस्या और बढ़ जाएगी ?

DC : मैं इस बारे में ज्यादा कहना नहीं चाहता। यूरोप में भी सार्वजनिक परिवहन सुविधा के होते हुए भी लोग कारें खरीदना नहीं छोड़ते। लोगों को सपने देखने से और ऊँचा सोचने की पूरी छूट है। यह समस्या तो सरकार ही हल कर सकती है। कारें एक अलग प्रकार की रस्ता हैं। वह हमारे लिए एक हैसियत का प्रतिरूप एवं एक आवश्यक ज़रूरत बन चुकी है।

प्रश्न : हर कार डिजाइन बनाते समय एक न्यूनतम तकनीकी आवश्यकता होती है। जब आप किसी कार का रूपांतरण करते हैं, क्या आप उसमें कोई समझौता करते हैं (जैसे एरोडायानमिक इफेक्ट आदि) ?

DC : नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। हमारी कारें प्लास्टिक के खिलौने नहीं होती हैं, वे असली रोड पर चलने वाली कारें होती हैं। कोई इंसान जब इतनी महंगी कार खरीदता है तो उसकी कुछ उम्मीदें होती हैं जिनपर हमें खरा उत्तरना होता है।

सवाल : लोग आपके दीवाने हैं खासकर कि आप जेम्स बॉन्ड एस्टन मार्टिन के रवायिता हैं। क्या आप अपनी कुछ यादें हमारे साथ बांटना चाहेंगे ?

DC : देखिए, जितना आपको पहले से पता है मैं उससे अधिक आपको जानकारी नहीं

दे पाऊँगा। मैंने यह कार जेम्स बॉन्ड के लिए नहीं बनाई थी। वह मैंने एक कम्पनी के लिए बनाई थी। वे लोग उसका कैसे इस्तेमाल करते हैं यह उनका निर्णय है।

प्रश्न : आपने कभी कोई डिजाइन नहीं दोहराई है। यह प्रगतिशील सोच आपमें बचपन से ही थी या हम बदलते वर्कर के साथ सीख लेते हैं?

DC : कोई भी जन्म से डिजाइनर नहीं होता है।

यह सब समय सिखाता है। यह विद्यानामक सोच है। यह एक चाहत है कि जिन्दगी का हर दिन कुछ नया हो। अगर मैं कुछ नया बना सकता हूँ तो मैं किसी पुरानी चीज़ का नकल कर्त्ता करूँगा। ये आवेश संचारी हो जाता है। शुरू के कुछ प्रोजेक्ट्स जिनसे आपको पहचान मिलती है, यह पहचान आपको बाँध लेती है। कोई भी इंसान जिसने कामयाबी का रुदाव चखा हो, उसे खोना नहीं चाहता है। अतः वह यह सुनिश्चित करता है कि उसके आस-पास के लोग भी पूरी तर्ज़ यात्रा से काम करें। अंत में यही कहना चाहूँगा कि जब आप कुछ नया करते हैं वह आपमें एक आवेग उत्पन्न कर देता है। फिर सब कुछ अपने आप ठीक होने लगता है। बस एक ही बात है - आपको जिन्दगी में जोखिम उठाना सीखना चाहिए। बस दिल लगाकर काम करें, बाकी सारे टुकड़े अपने आप जुड़ जाते हैं।

प्रश्न : हमने सुना है कि आपको बचपन से ही कार डिजाइनिंग में रुचि रही है।

DC : हाँ, क्योंकि यदि आप एक कार डिजाइनर बनाना चाहते हैं तो आपको बहुत ज़त्दी शुरूआत करनी पड़ती है। ये आवेग काफी लोगों में होता है। मेरे पास चोज़ाना काफी युवाओं के ई-मेल आते हैं। हो सकता है कि बस यही अंतर है कि मैंने जोखिम उठाया।

मेरे माता-पिता ने मुझे अपनी राह चुनने का अधिकार दिया। दूसरे लोग अभी भी इस उलझन में रहते हैं कि क्या कार डिजाइनिंग एक अच्छा कैरियर है? बस इसलिए वे अपने बच्चों को पारम्परिक कैरियर लेने की सलाह देते हैं। मेरा सोचना है कि इन लोगों में जोखिम उठाने की विज्ञप्ति होनी चाहिए।

प्रश्न : आपने बताया था कि आपके जुनून ने आपको अपने पुराने कैरियर को छोड़ने पर मजबूर किया और उसके बाद आपने भारत का चुनाव किया अपनी कम्पनी खोलने के लिए जबकि तब भारतीय नोटर उद्योग में खास बढ़ावानी नहीं थी।

DC : मैं कभी नोटर उद्योग के कारण वापस नहीं आया। उस उद्योग की अहमियत उस वक्त से कुछ वर्ष बाद थी, यानि जो समय अभी चल रहा है। वह भारतीय खींचदार थे जिनके बारे में सोच करना चाहता था। हम भारतीय इतनी जल्दी बदल नहीं सकते। मैंने सोचा कि यदि मैं वह बदलाव ला पाया तो मेरी कम्पनी बहुत आगे तक जा पाएगी। साथ ही मैं कभी-कभी अपनी सोचाएँ उत्पादकों को भी दे पाऊँगा। मैं अपनी डिजाइन दुनिया को दिखाना चाहता था और मुझे अपनी ब्रांड इमेज भी बनानी थी। इसके लिए अपने देश से बेहतर कौन सी जगह हो सकती है?

मैं भारत आया क्यों कि मैं एक भारतवाली हूँ और मैं जानता था कि ग्राहक चाहे भारतीय हो या विदेशी, सबकी उम्मीदें एक समान ही होती हैं।



विभागोद्देश पर विशेष

Autumn sem की तुलना में Spring सेम काफ़ी मरम्मती भरा एवं व्यरुत होता है। KGP के दो महत्वपूर्ण फेस्ट Spring fest एवं Kshitij के बीत जाने के बाद डिपार्टमेंट फेस्ट अपना रंग बिखेरने को तैयार हैं। ये फेस्ट CEP(Continuing Education Programme) के तहत छात्रों द्वारा आयोजित किये जाते हैं। इस बार संस्थान के नियमों ने इनकी उपयोगिता और बढ़ा दी है। इन नियमों के अनुसार फेस्ट के बजट का 20 प्रतिशत हिस्सा CEP को देना होगा। यह हिस्सा CEP वापस डिपार्टमेंट को दे देगा ताकि डिपार्टमेंट के विकास पर खर्च हो सके। कम्प्यूटर साइंस के फेस्ट Bitwise के साथ ही इन पर्वों का उद्द्योग हो चुका है :

Bitwise 2008

Bitwise 10 ફરવરી 2008 <http://www.bitwise.iitkgp.ernet.in>

इशा फेस्ट की नीति 2001 बैच के छात्रों द्वारा डाली गई थी। यह प्रोग्रामिंग में चर्चि रखने वालों के लिए सुनहरा अवसर हैं जिसमें वे दुनिया भर के प्रोग्रामरों के बीच अपने स्तर की जाँच कर सकते हैं। पिछले वर्ष इस फेस्ट में करीब 37 देशों के 2500 छात्रों ने हिस्सा लिया था। आयोजकों के अनुसार इस बार करीब 75 देशों के छात्र इसमें भाग लिए हैं। इस फेस्ट की इनामी राशि 2.2 लाख के लगभग थी। इस फेस्ट का एक गेम enigma काफ़ी लोकप्रिय रहा।



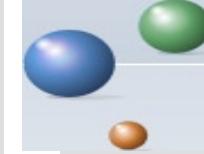
Optima- <http://iem.iitkgp.ernet.in/optima>

इण्डस्ट्रीयल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट का यह
काला जन्मदिन मना रहा होगा। इस फेस्ट का
टिंग को लौकिक प्रिय बनाना है। द्वितीय वर्ष की
बैनर्जी ने बताया कि इसमें पिछले वर्ष 26
वर इस बार बिजनेस स्कूलों के छात्रों के हिस्सा
में AFFAIRES(B plan contest), case study
प्रेर सारे अन्य आकर्षक इवेन्ट भी होंगे। पिछले
महीने को देखते हुए इसे इस वर्ष हटा दिया
लाख है।



Genesis:- <http://www.genesisiitkgp.in>.

विश्व भर में हो रही Biotechnology के क्षेत्र में तरक्की से प्रभावित होकर Biotechnology विभाग ने पूर्वी भारत का पहला Biotech fest - Genesis कराने का निश्चय किया है। इसका आयोजन 4-5 अप्रैल से होगा। इसमें होने वाले 9 events में से प्रमुख हैं Bio-entrepreneurship को प्रोत्साहन देने के लिये Bizwiz, Bio-informatics को लोकप्रिय बनाने के लिये Bionetic का आयोजन किया जा रहा है। इसमें छात्रों को bioindustries को जानने का भी मौका मिलेगा।



Composit:- <http://iitkgp.ac.in/composit>

 Metallurgical डिपार्टमेन्ट का यह फैस्ट सर्वों पुराना डप फैस्ट है। यह 14 साल का सफर तय कर चुका है। इसमें प्रतिभागियों की संख्या की बजाए उनकी गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दिया जाता है। पिछली बार इसमें 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। इसके प्रमुख Events हैं Technical quiz, school quiz, panel discussion। पिछले वर्ष POSTECH South Korea विश्वविद्यालय ने भी इसमें हिस्सा लिया था। यह फैस्ट 29-31 मार्च तक होने वाला है।

खवरे

पार्क घटना का असर :-

पार्क के घटनाचक्र से प्रश्नासन इस कद्र सकते में आ गया है कि आनन-फानन में ऐसे कदम उठाए जा रहे हैं जिनसे निर्दोष छात्रों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। Cheddies को रात 11 बजे के बाद बन्द करवा दिया जा रहा है। इससे रात भर लैब में काम करने वाले छात्रों के बीच त्राहि - त्राहि मध्य गयी है क्योंकि रात में परिसर में खाने को कुछ भी नहीं मिलता। रात में संत्थान में घूमने-फिरने पर भी बार बार I-card दिखाना पड़ रहा है। बाहर के देस्तरों को भी रात 10 बजे के बाद बन्द करने के भी निर्देश जारी किये गये हैं।

IIITKGP 46 करोड़ की लागत से 4 नये रुक्ति खोलने जा रहा है

School of Entrepreneurship:-

यह रक्कूल अपनी तरह का भारत का पहला रक्कूल होगा। शुरूआत में इसमें 50 विद्यार्थियों को Entrepreneurship के 5 वर्षीय Dual-डिग्री पाठ्यक्रम में चयनित किया जाएगा। यह चयन JEE द्वारा ही होगा। इस विद्यालय का आधा खर्च IIT के Alumni द्वारा देना है।

Ranvir and Chitra Gupta School of Infrastructure Design and Management: Architecture डिपार्टमेंट के 1974 बैच के alumni रणवीर लिंग गुप्ता ने संस्थान को मिलियन डॉलर प्रदान किए हैं। किसी भी alumni द्वारा दी गयी ये हितीय सर्वोच्च राशि

दो अन्य रक्कूली हैं School of Telecommunication Engineering और Steel Technology

IIIT खड़गपुर के पूर्व निदेशक कल्पतृी लाल चौपडा (1987-87) को 59वें गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा नागरिक पुरस्कार पदम् श्री से सम्मानित किया गया। उन्होंने एप्रिल 2018 महीने तक दीर्घी के लिए श्रीमंति दिल्ला जी के साथ एक अमृतसंग्रह का आयोजन किया।

Knowledge Camp:

छात्रों में entrepreneurship के प्रति बढ़ते उत्साह को दैयान में रखते हुए ECell Knowledge Camp आयोजित कर रहा है। इसका पहला कैम्प 9 फरवरी को Finance विषय पर किया गया। ऐसे कैम्प साला भर समय-समय पर होते रहेंगे जिनमें छात्रों के विचारों पर चर्चा की जाएगी और उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जायेगा।

GATE

खबरें आ रही हैं कि सुपर फाइनल इयर के छात्रों को Gate उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली धनराशि में भारी फेरबदल की सम्भावना है। हालांकि इन खबरों की वास्तविकता पर अभी संदेह है। अगर इन खबरों को माने तो अगले वर्ष से stipend precentile के आधार पर मिलेंगे जैसे 95% से ऊपर वालों को 12000 रुप्रति माह तथा 90 percentile से ऊपर वालों को 8500 प्रति माह। जिन छात्रों की C.G. 8.0 के ऊपर है उन्हें 5000 रुपये से सन्तोष करना पड़ेगा क्योंकि वो Gate में शामिल नहीं हुए।

Mining

IITKGP और KIGAM डाइजो, कोटिया 12-14 फरवरी को GTEE-2008 का आयोजन कराया। इस कार्यक्रम ने प्रतियोगियों को Mining एवं Geo-Space की उपयोगिता के सन्दर्भ में जानकारी से अवगत कराया। तीन दिन के इस कार्यक्रम में प्रोग्रेसी, पैरेलाट सेशन डैसे इवेन्ट थे। आयोजक समिति के अनुसार इस कानफ़्स को भारत एवं विदेशी

100

Masti 2008:-
‘मैथिनाद साहा हॉल ने 19-20 जनवरी को मस्टी ’08 नामक fest आयोजित करता करता अपने हॉल के लिये नयी परम्परा शुरू की है। इस फेर्स्ट में Open Canvas, OMag, Hesit और Mentatheyry जैसे खेल आयोजित किये गये। Freshers के लिये अच्छी इनाम राशि